राजधानी

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

वर्ष 20 अंक 218
पृष्ठ 16+8+4=28
नई दिल्ली, रविवार
21 फरवरी, 2010
राजधानी
मूल्य 3.50 रुपये

क्राफ्ट पेपर मिल्स की मनमानी, उद्योग प्रभावित

पैकेजिंग मेटेरियल के मूल्य में महीनेभर के भीतर हुई बढ़ोतरी के खिलाफ पैकेजिंग उद्योग से जुड़े लोगों ने चिंता जताई है। शनिवार को दिल्ली में आयोजित एक प्रेसवार्ता के दौरान उद्योग जगत से जुड़े हरीश मदान ने बताया कि उत्तर भारत की क्राफ्ट पेपर मिल्स ने पैकेजिंग पेपर के दाम एक महीने के भीतर तीन हजार से चार हजार प्रति टन की बढ़ोतरी कर दी है। कागज पैकेजिंग उद्योग का मुख्य कच्चा उत्पाद है जिसके रेट बढ़ने से पैकेजिंग उद्योग बंद होने के कगार पर आ गया है। इसके अलावा अन्य जरूरी चीजें जैसे स्टार्च, स्टिचिंग वायर का मूल्य तकरीबन 50 फीसदी बढ़ चुका है, जिसके चलते यह उद्योग बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। उन्होंने कहा कि उत्तर भारत के पेपर मिलों के मालिक सरकार की नीतियों को धता बताते हुए पेपर की कीमतें मनमाने ढंग से बढ़ा रहे हैं। वहीं पैकेजिंग उद्योग से जुड़े लोगों द्वारा गठित संयुक्त कार्यकारी समिति के सदस्य सुशील सूद ने कहा कि पैकेजिंग उद्योग में उपयोग किए जाने वाले कागज के निर्माता बेवजह कागज की कीमतें बढ़ा देते हैं, जबकि बड़े उद्योगों की गुटबाजी या मनमानी पर लगाम लगाने की मंशा से सरकार ने मई 2009 में संविधान के अंतर्गत कंपीटिशन एक्ट 2002 उल्लेखित है।